

रॉबर्ट वानॉय , बाइबिल भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 8

भविष्यवाणी संदेश और टी/एफ पैगंबर

ग) राजनीतिक मुद्दे

हम भविष्यवक्ताओं के संदेश को चार क्षेत्रों पर केंद्रित कर रहे हैं - हमने धार्मिक-धार्मिक और नैतिकता-सामाजिक संबंधों को देखा, और यह हमें "राजनीतिक मुद्दों" पर लाता है।

1. इज़राइल

a) सैमुअल पैगंबर राजनीतिक मुद्दों पर बहुत बार बोलते हैं। इस देश में चर्च और राजनीति को अलग रखा जाता है। लेकिन आप कह सकते हैं कि जब भविष्यवक्ता राजनीतिक मुद्दों पर बोलते थे तो उनके दो अलग-अलग फोकस होते थे। एक आंतरिक राजनीति थी और वह विशेष रूप से राजा के वाचा के संबंध से संबंधित है और क्या वह एक सच्चे वाचा राजा के रूप में अपनी भूमिका निभा रहा था। यदि आप विशेष रूप से राजत्व के इतिहास पर जाएं तो आपको याद आएगा कि राजत्व की स्थापना एक भविष्यवक्ता, सैमुअल द्वारा की गई थी। उसने पहले शाऊल का अभिषेक किया, और फिर बाद में प्रभु के वचन द्वारा शाऊल को अस्वीकार करने के बाद, प्रभु ने शमूएल से कहा कि वह जाकर शाऊल से कहे, "क्योंकि तुमने मुझे अस्वीकार कर दिया है, मैंने भी तुम्हें अस्वीकार कर दिया है।" तब उसने शमूएल को यिशै के घर बेतलेहेम भेजा, जहां उसने शाऊल के स्थान पर राजा बनने के लिये दाऊद का अभिषेक किया। इसलिए, आरंभ से ही राजा भविष्यवक्ता के वचन के अधीन था। जब राजा अपनी वाचा संबंधी जिम्मेदारियों से भटक गए तो भविष्यवक्ताओं ने जाकर उनका सामना करने में संकोच नहीं किया।

बी) एलिय्याह - 1 राजा 17 इसलिए, एलिय्याह जैसा भविष्यवक्ता, 1 राजा 17 में, बाहर जाता है और राजा अहाब का सामना करता है। हम 1 राजा 17:1 को देख रहे हैं, "गिलाद के तिशबे के एलिय्याह तिशबी ने अहाब से कहा, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के जीवन की

शपथ, जिसकी मैं सेवा करता हूँ, उस में न तो ओस पड़ेगी, और न वर्षा होगी। अगले कुछ साल, मेरे कहने के अलावा।" यह भविष्यवक्ताओं की खासियत है। जब राजाओं का सामना करने की बात आती है तो वे निडर होते हैं।

ग) यशायाह 7

यशायाह यशायाह 7:3 में आहाज के साथ भी ऐसा ही करता है, "यहोवा ने यशायाह से कहा, 'तू और तेरा पुत्र शीयर- याशूब, आहाज से मिलने के लिये ऊपरी तालाब के जलसेतु के सिरे पर, सड़क पर जाओ। धोबी का खेत।' वह सार्वजनिक स्थान पर है, "उससे कहो, "सावधान रहो, शांत रहो और डरो मत। जलाऊ लकड़ी के इन दो सुलगते ढूँठों के कारण, रसीन और अराम के भड़के हुए कोप के कारण, और रमल्याह के पुत्र के कारण हियाव न खोना। अराम, एप्रैम और रमल्याह के पुत्र ने यह कहकर तुम्हारे विनाश की साज़िश रची है, 'आओ हम यहूदा पर आक्रमण करें।'" तभी इस्राएल के पेकह और सीरिया के रेजिन ने यहूदा के सिंहासन पर आहाज की जगह लेने की धमकी दी। दूसरे शब्दों में, यहूदा के सिंहासन पर आहाज से छुटकारा पाने के लिए उत्तरी राज्य सीरियाई या अराम के साथ गठबंधन किया गया था। अब आहाज क्या कर रहा है? वह रेजिन और पेकाह के पीछे अश्शूरियों के पास जाता है और अश्शूरियों के साथ गठबंधन बनाता है। असीरियन नीचे आए और आहाज पर दबाव कम किया, और ऐसा लगता है कि यह सफल हो गया होगा। परन्तु प्रभु उससे ऐसा नहीं चाहते थे। वह यहाँ पद 7 में कहता है, "प्रभु यहोवा यों कहता है, 'ऐसा नहीं होगा, ऐसा नहीं होगा, क्योंकि अराम का सिर दमिश्क है, और दमिश्क का सिर रसीन है। पैंसठ वर्ष के भीतर एप्रैम इतना टूट जाएगा कि वह एक जाति ही नहीं रह जाएगा। एप्रैम का मुखिया सामरिया है, और सामरिया का मुखिया रमल्याह का पुत्र ही है। यदि आप अपने विश्वास में दृढ़ नहीं रहते हैं, तो आप बिल्कुल भी खड़े नहीं रह पाएंगे।" भगवान कह रहे हैं कि उन्हें उस पर भरोसा करना है। "मैं तुम्हें इन लोगों से बचाऊंगा," और आहाज ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। उसने प्रभु की अपेक्षा अश्शूर पर भरोसा करना पसंद किया। इसलिए, जब राजा भटक जाते हैं तो भविष्यवक्ता राजाओं का सामना करते हैं।

घ) 2 राजा 19 और 22 हिजकिय्याह और योशिय्याह कभी-कभी, राजा भविष्यवक्ताओं से वचन मांगते हैं। 2 राजाओं 19 में, हिजकिय्याह ने यशायाह से पूछा कि उसने किस स्थिति का सामना किया और उसे क्या करना चाहिए। 2 राजाओं 22 में, योशिय्याह हुल्दा की तलाश करता है - तभी कानून की किताब मंदिर में मिली थी - और वह उसे हुल्दा के पास ले जाता है यह देखने के लिए कि वह प्रभु से क्या कहेगी। तो, राजा और भविष्यवक्ताओं के बीच यह संबंध है।

यदि आप अपने उद्धरणों में पृष्ठ 7 को देखते हैं, तो वोस यह कहता है, "इस राज्य-उत्पादक आंदोलन के साथ, पैगम्बरवाद का उदय और विकास स्वयं जुड़ा हुआ है। भविष्यवक्ता उभरते हुए धर्मतंत्र के संरक्षक थे, और संरक्षकता का प्रयोग इसके केंद्र, राज्य में किया जाता था। इसका उद्देश्य इसे यहोवा के राज्य का सच्चा प्रतिनिधित्व बनाए रखना था। कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है मानो भविष्यवक्ताओं को लोगों के बजाय राजाओं के पास भेजा गया हो।" राजा नेता था. राजा उस प्रकार का नेतृत्व देने के लिए जिम्मेदार था जो लोगों को वाचा का पालन करने के लिए कहता और यदि वे ऐसा नहीं करते, तो भविष्यवक्ता राजाओं का सामना करते थे। तो यह उस चीज़ से संबंधित है जिसे आप राजनीतिक रूप से "आंतरिक मुद्दे" कह सकते हैं।

2) विदेशी संबंध

जहां तक विदेशी संबंधों का सवाल है, भविष्यवक्ताओं के पास भी कहने के लिए बहुत कुछ था। यहां उन्होंने जो किया वह बुतपरस्त देशों के साथ गठबंधन का विरोध करना था।

क) आहाज ने असीरिया के साथ गठबंधन किया

आहाज ने असीरिया के साथ गठबंधन किया, जिसकी यशायाह ने निंदा की है। यदि आप यशायाह 30 श्लोक 1 को देखें, तो यशायाह कहता है, प्रभु की वाणी है, "अड़ियल बच्चों पर

धिक्कार है," उन पर जो मेरी नहीं, गठबंधन बनाकर, परन्तु मेरी आत्मा के द्वारा नहीं, पाप का ढेर लगाते हैं। पाप; जो मुझ से बिना पूछे मिस्र को चले जाते हैं; जो फिरौन की शरण में और मिस्र की शरण में शरण की आशा करते हैं।" दूसरे शब्दों में, इस्राएल को अपनी सुरक्षा कहां मिलनी थी? बुतपरस्त राजाओं और राष्ट्रों के साथ गठबंधन में, चाहे वह असीरिया हो या मिस्र? नहीं, तुम्हें प्रभु पर भरोसा रखना है, वाचा के मार्ग पर चलना है और प्रभु स्वयं उनका रक्षक होगा। तो, यशायाह कहता है, "हाय तुम पर जो फिरौन से सहायता की आशा रखते हो।" यह अध्याय 31 के समान है, "धिक्कार है उन लोगों पर जो मदद के लिए मिस्र जाते हैं, जो घोड़ों पर भरोसा करते हैं, जो अपने रथों की भीड़ और अपने घुड़सवारों की महान ताकत पर भरोसा करते हैं, लेकिन पवित्र की ओर नहीं देखते हैं।" इस्राएल, या यहोवा से सहायता मांगो।" इसलिए, भविष्यवक्ता विदेशी गठबंधनों की निंदा करते हैं। अक्सर विदेशी गठबंधनों में धार्मिक समझौता शामिल होता था क्योंकि अक्सर इन विदेशी शासकों के देवताओं को इज़राइल के साथ संबंध में लाया जाता था और इससे एकमात्र सच्चे ईश्वर में इज़राइल के विश्वास से समझौता होता था।

ख) 2 इतिहास 16:7-9 2 इतिहास 16:7-9 को देखें, "उस समय, हनन्याह द्रष्टा यहूदा के राजा आसा के पास आया, और उस से कहा, 'क्योंकि तू ने अराम के राजा पर भरोसा किया था, न कि तेरे परमेश्वर यहोवा की कृपा है, अराम के राजा की सेना तेरे हाथ से बच गई है।" फिर वह श्लोक 8 में कहता है, "क्या कूशी और लीबियाई बड़ी संख्या में रथों और घुड़सवारों के साथ एक शक्तिशाली सेना नहीं थे? तौभी जब तुम ने यहोवा पर भरोसा रखा, तब उस ने उनको तुम्हारे हाथ में कर दिया।" यदि आप प्रभु पर भरोसा करते हैं, तो आपको मुक्ति, सुरक्षा और सुरक्षा मिलेगी - विदेशी राष्ट्रों से नहीं। पद 9, "क्योंकि यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर फैली हुई है, और उन लोगों को बल देती है जिनके मन उसके प्रति पूरी तरह समर्पित हैं। तुमने मूर्खतापूर्ण काम किया है, और अब से तुम युद्ध में रहोगे।" आसा की प्रतिक्रिया क्या थी? इस बात से आसा द्रष्टा से क्रोधित हुआ। वह इतना क्रोधित हुआ कि उसने उसे जेल में डाल दिया। यह वह नहीं था जो वह सुनना चाहता था।

3) राष्ट्रों का उत्थान और पतन विदेशी गठबंधनों से परे भविष्यवक्ताओं ने अक्सर कई विदेशी राष्ट्रों के उत्थान और पतन के बारे में भी बात की। आपको बेबीलोन, अशूर, मिस्र, एदोम और मोआब के बारे में भविष्यवाणियाँ मिलती हैं, विशेषकर यशायाह और यिर्मयाह में। मुख्य बात यह है कि सभी राष्ट्रों की नियति ईश्वर की संप्रभु शक्ति के अधीन है। इसलिए, इज़राइल की शत्रु शक्तियाँ, चाहे बेबीलोन, असीरिया, मिस्र या अराम, सभी को भविष्यवक्ताओं द्वारा अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए ईश्वर के हाथों में उपकरण के रूप में माना जाता है - कभी-कभी अपने ही लोगों पर निर्णय लेने के लिए जब असीरिया उत्तरी पर हमला करता है साम्राज्य। यही कारण है कि जब आप यिर्मयाह के पास पहुंचते हैं तो उसे उन लोगों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं होती है जो बेबीलोन के जुए को उतार फेंकना चाहते हैं और बेबीलोन के उत्पीड़न का विरोध करना चाहते हैं क्योंकि यिर्मयाह कहता है कि यह ईश्वर का उद्देश्य है, उनके लिए उसकी इच्छा बेबीलोन के अधीन होने की है। यह भगवान का फैसला है। लेकिन फिर हम बाद में जानते हैं कि यहूदा के बाबुल की कैद में चले जाने के बाद, प्रभु ने फारस के शासक कुसू को खड़ा किया, और फिर कुसू परमेश्वर के हाथ में मुक्ति का साधन बन गया। भगवान अपने लोगों को वापस लौटने और खुद को फिर से स्थापित करने की अनुमति देने जा रहे हैं। तो ये राजनीतिक मुद्दों के बारे में संक्षिप्त टिप्पणियाँ हैं।

डी। एस्कैटोलॉजी और मसीहाई उम्मीदें डी। "एस्कैटोलॉजी और मसीहाई उम्मीदें।" बहुत व्यापक शब्दों में भविष्यवक्ता एक ऐसे भविष्य के बारे में बात करते हैं जिसमें, प्रभु के दिन, सभी अधर्मियों पर न्याय आएगा और मसीहा राजा के शासन के तहत भगवान के अपने लोगों के लिए खुशी और शांति का भविष्य होगा। तो वहाँ वह दीर्घकालिक युगांतशास्त्रीय दृष्टि है कि अंततः संपूर्ण मानव इतिहास आ जाएगा, समाप्ति का एक बिंदु जिसमें मसीहा राजा पूरी पृथ्वी पर शासन करेगा। यशायाह कहते हैं, अभिशाप हटा दिया जाएगा और शांति और सद्भाव बनाया जाएगा, तलवारों को पीट-पीट कर हल के फाल और

उस तरह की चीजों में बदल दिया जाएगा।

1) फ्रीमैन: नेशन एंड सफ़रिंग सर्वेंट फ्रीमैन के *एन इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टेस्टामेंट प्रोफेट्स* में वह मसीहाई भविष्यवाणी की दो धाराओं की बात करता है जो उत्पत्ति 12:1-3 में इब्राहीम से किए गए वादे से विकसित होती हैं। उत्पत्ति 12 में, आपको याद होगा, प्रभु ने इब्राहीम से कहा था, "मैं तुमसे एक महान राष्ट्र बनाऊंगा" और फिर वह कहते हैं, "तुम्हारे और तुम्हारे वंश के कारण पृथ्वी की सभी जातियाँ धन्य होंगी।" फ्रीमैन का कहना है कि भविष्यवाणी की ये दो धाराएँ हैं जो इब्राहीम से किए गए वादे में निहित हैं। एक धारा इस्राएल राष्ट्र के भविष्य की बात करती है, "मैं तुमसे एक महान राष्ट्र बनाऊंगा।" उस राष्ट्र पर दाऊद के राजा या मसीहा के राजा का शासन होगा जो आएगा। भविष्यवाणी की दूसरी धारा पीड़ित सेवक के रूप में मसीहा के कार्य पर जोर देती है; जो अपने लोगों के पापों को सहन करेगा, उस दुःखी सेवक के कार्य के द्वारा पृथ्वी की सारी जातियाँ आशीष पाएंगी। मुझे लगता है कि इसमें कुछ बात है। भविष्यवाणी की उन दो धाराओं के बारे में सोचें। तू एक को देख, पीड़ित सेवक का काम; वहाँ ध्यान ईसा मसीह के पहले आगमन और ईसा मसीह के पहले आगमन में शामिल सभी चीजों पर है - विशेष रूप से क्रूस पर उनकी प्रायश्चित बलिदानी मृत्यु पर। यह स्पष्ट रूप से उन अंशों का संदेश है, यशायाह की पुस्तक का चरमोत्कर्ष, यशायाह के अध्याय 53 में, जहाँ आपके पास उन लोगों के पापों को सहन करने वाले पीड़ित सेवक का अद्भुत वर्णन है जिन्होंने भगवान की आज्ञा को तोड़ा है। लेकिन भविष्यवाणी की दूसरी धारा इस बारे में है कि "मैं तुम्हें एक महान राष्ट्र बनाऊंगा।" वे भविष्यवाणियाँ मसीह के दूसरे आगमन से संबंधित हैं, जब वह महान मसीहा राजा अधर्मियों को वश में करेगा और पूरी पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करेगा।

अब, इस बिंदु पर, मैं भविष्यवाणी की इन दो धाराओं के बीच अंतर-संबंधों को कैसे विकसित किया जाए, इससे संबंधित किसी भी मुद्दे पर चर्चा नहीं करने जा रहा हूँ; क्या आप उस दूसरी धारा की पूर्ति, इज़राइल को एक महान राष्ट्र के रूप में देखते हैं; क्या आप इज़राइल की किसी पुनर्स्थापना और इस धरती पर सहस्राब्दी साम्राज्य में इसकी तलाश कर

रहे हैं। ये कठिन प्रश्न हैं। लेकिन, निश्चित रूप से, भविष्यवक्ताओं ने युगांत संबंधी मुद्दों और जिस तरह से भगवान का उद्देश्य पुराने नियम के समय से परे ईसा मसीह के पहले और दूसरे आगमन में खेला है, उसे संबोधित करने में काफी समय बिताया।

2) वोस

मुझे लगता है कि वोस जो कहता है वह यह है कि भविष्यवक्ता अपने संदेश को राज्य के केंद्र के लिए हृदय के माध्यम से प्रभावित करते हैं, जो राजा के व्यक्ति को दिया गया था। पुजारी बलिदानों, परंपरा के संचालन के लिए जिम्मेदार होगा, और लेवियों को उनकी भूमिका सिखाने के लिए जिम्मेदार होगा। लेवी शिक्षा देने में लगे हुए थे और याजक समारोहों में भाग ले रहे थे। हमारे पास इस तरह से दुर्व्यवहार के उदाहरण हैं और भविष्यवक्ता ईश्वर के प्रति उचित हृदय दृष्टिकोण के बिना दुष्ट रूपों और अनुष्ठानों के खतरों के बारे में बात करते हैं। इसका एक स्पष्ट उदाहरण है जब एली और उसके बेटों को बलि प्रणाली के दुरुपयोग के लिए दोषी ठहराया गया।

6. सच्चे और झूठे पैगम्बर a. एक पैगंबर के कथन - इस प्रकार भगवान कहते हैं

आइए 6., "सच्चे और झूठे भविष्यवक्ता," और ए पर चलते हैं। "एक भविष्यवक्ता के बयान।" हमने पहले इसका उल्लेख किया था, यह तथ्य कि सच्चे और झूठे भविष्यवक्ता मौजूद हैं - क्या इससे इस्राएलियों की जिम्मेदारी नहीं बढ़ती है जो सच्चे भविष्यवक्ताओं पर ध्यान देते हैं न कि झूठे भविष्यवक्ताओं पर? हमने पहले भी कहा है कि भविष्यवक्ताओं को स्वयं इस तथ्य का बहुत तत्काल और निश्चित ज्ञान था कि उन्होंने जो संदेश कहा था वह उनका अपना नहीं था बल्कि वह ईश्वर का संदेश था। वे अपने शब्दों और प्रभु के शब्दों के बीच अंतर कर सकते थे। हम उसके उदाहरण देख सकते हैं। इसलिए एक भविष्यवक्ता को निश्चितता थी जब उसने कहा कि यह परमेश्वर का वचन है। वह बिना किसी संदेह के जान सकता था कि वह जो कह रहा था वह परमेश्वर का वचन था। लेकिन उन लोगों के साथ ऐसा नहीं है जिनसे भविष्यवक्ता बात करते हैं। लोग यह कैसे जान सकते हैं कि भविष्यवक्ता ने

जो कहा वह वास्तव में दैवीय मूल का था, और क्या भविष्यवक्ता का दावा वास्तव में सच था, अर्थात् वह ईश्वर के लिए बोल रहा था? आप पूछ सकते हैं, क्या भविष्यवक्ता की आत्म-साक्षी पर्याप्त नहीं है क्योंकि भविष्यवक्ता बार-बार कहते हैं कि उनका संदेश ईश्वर की ओर से है? यह महत्वपूर्ण है, और मैं इसे कम नहीं करना चाहता। वे सदैव अपना संदेश प्रस्तुत करते हैं, "प्रभु ऐसा कहते हैं।"

ख) यहजेके 13:6

लेकिन समस्या यह है कि ऐसे लोग भी हैं जो आते हैं और कहते हैं कि उनके पास भगवान का एक संदेश है और यहां तक कि उन्होंने उस भाषा का इस्तेमाल भी किया है, "भगवान ऐसा कहते हैं," जबकि भगवान ने उन्हें नहीं भेजा था। यहजेकेल 13:6 को देखें, जहाँ यहजेकेल कहता है, "उनके दर्शन झूठे हैं, उनकी भविष्यवाणियाँ झूठी हैं।" ये लोग हैं कौन? यदि आप पद दो पर वापस जाते हैं, "उन लोगों से कहो जो अपनी कल्पना से भविष्यवाणी करते हैं, 'प्रभु का वचन सुनो!' प्रभु यहोवा यही कहता है, 'हाय उन मूर्ख भविष्यवक्ताओं पर जो अपनी आत्मा के पीछे चलते हैं और कुछ नहीं देखा।" और छंद छह में, "उनके दर्शन झूठे हैं और उनकी भविष्यवाणियाँ झूठी हैं। वे कहते हैं, 'प्रभु की वाणी है,' जबकि प्रभु ने उन्हें नहीं भेजा, फिर भी वे अपने शब्दों के पूरे होने की आशा करते हैं।" इसलिए झूठे भविष्यवक्ता आते हैं, और झूठे भविष्यवक्ता सच्चे भविष्यवक्ताओं की तुलना में भगवान के मुखपत्र होने के अपने दावों में कम निश्चित नहीं हैं। इसलिए आपको अपने आप को प्राचीन इस्राएलियों की स्थिति में रखना होगा, जहां आप बाहर जा सकते हैं और आप एक भविष्यवक्ता को यह कहते हुए सुन सकते हैं, "यहोवा यों कहता है।" वह एक संदेश देता है, और फिर एक और भविष्यवक्ता आता है और कहता है, "प्रभु यों कहता है" और वह एक विपरीत संदेश देता है। फिर आपको यह पता लगाना होगा कि सच्चा पैगम्बर कौन है, या दोनों में से कोई भी सच्चा पैगम्बर नहीं है?

इससे यह प्रश्न उठता है कि फिर इस्राएली सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर कैसे कर सकते थे? यह केवल एक सैद्धांतिक मुद्दा नहीं है क्योंकि यह इस्राएलियों के

रहने के तरीके को प्रभावित करेगा। उन्होंने जो संदेश सुना उस पर उन्हें कैसे प्रतिक्रिया देनी थी? फिर हम व्यवस्थाविवरण 18 पर वापस जाते हैं, वह मार्ग जहां संपूर्ण भविष्यवाणी आंदोलन स्थापित किया गया है और पहले से ही समझाया गया है कि इसे क्या होना चाहिए। व्यवस्थाविवरण 18:19 कहता है, "यदि कोई मेरी बातें न सुने, जो भविष्यद्वक्ता मेरे नाम से कहे, तो मैं आप ही उस से लेखा लूंगा।" इस प्रकार इस्राएली परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी था कि वह भविष्यद्वक्ता के शब्दों को सुने और उस प्रकार व्यवहार करे जिस प्रकार भविष्यद्वक्ता ने कहा था कि उसे करना चाहिए। जब दो विरोधाभासी संदेश कार्रवाई के विपरीत तरीकों की वकालत करते थे, और उन दोनों को ईश्वर के शब्द के रूप में दर्शाया जाता था, तो इस्राएलियों को क्या करना था?

ग) यिर्मयाह 27 इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण, जिसे हम पहले ही देख चुके हैं, यिर्मयाह 27 और 28 में है, जहां हनन्याह नाम का एक भविष्यवक्ता यह कहते हुए आ रहा है, "यहोवा यों कहता है, बेबीलोन का जूआ उतार फेंको, उसका विरोध करो," और वादा करता है कि यहोवा सहायता करेगा, और दो वर्ष के भीतर यहोवा के भवन के पात्र यरूशलेम को लौट आएं। उसी समय, यिर्मयाह आता है और इसके विपरीत कहता है, "बाबुल के अधीन हो जाओ, हनन्याह जो कहता है वह होने वाला नहीं है।" दोनों भविष्यवक्ता प्रभु के नाम का उपयोग करते हैं - जो उनके संदेश को मंजूरी देता है। तो आपको यह मुद्दा समझ आ गया है कि आप सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर कैसे सुलझाते हैं? उस मुद्दे की कल्पना व्यवस्थाविवरण 18 में पहले से ही की गई थी, उस अनुच्छेद में जहां भविष्यवाणी आंदोलन स्थापित है। श्लोक 21 में और व्यवस्थाविवरण 18 के अनुसरण में आप पढ़ते हैं, "आप अपने आप से कह सकते हैं, 'हम कैसे जान सकते हैं कि संदेश प्रभु द्वारा नहीं कहा गया है?' " निस्संदेह, यही प्रश्न है। सच्चे और झूठे भविष्यवक्ता के बीच अंतर करने का एक तरीका इस प्रकार है। श्लोक 22 कहता है, "यदि भविष्यवक्ता प्रभु के नाम पर जो घोषणा करता है वह पूरा नहीं होता या सच नहीं होता, तो यह वह संदेश है जो प्रभु ने नहीं कहा है।" मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यदि भविष्यवक्ता कहता

है कि कुछ होने वाला है, तो यह पता चलता है कि ऐसा नहीं होता है - वह भविष्यवक्ता प्रभु का वचन नहीं दे रहा है बल्कि झूठा वचन दे रहा है। यह प्रभु की ओर से नहीं हो सकता। लेकिन समस्या यह है कि यह केवल उन चीजों के बारे में बात करता है जो भविष्य में घटित होंगी और उसके बाद ही जो कुछ भी कल्पना की जाती है वह या तो घटित होता है या नहीं होता है। इसलिए इसके अतिरिक्त कुछ अन्य तरीके भी होने चाहिए जिससे उस प्रश्न का समाधान किया जा सके।

बी। सच्ची भविष्यवाणी के लिए मान्यता मानदंड

आइए बी पर आगे बढ़ें, "सच्ची भविष्यवाणी के लिए सत्यापन मानदंड।" मुझे लगता है कि जब हम पूरी स्थिति को देखते हैं तो कम से कम पांच विचार हैं जो इज़राइलियों को सच्ची और झूठी भविष्यवाणी के बीच अंतर करने में सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मैं उन पांच को देखना चाहता हूँ जो सत्यापन मानदंडों के तहत वहाँ सूचीबद्ध हैं। मुझे लगता है कि जब आप इनमें से प्रत्येक को देखेंगे तो हमें यह कहना होगा कि वे अलग-अलग काम नहीं करते हैं। दूसरे शब्दों में, ये मानदंड प्राचीन इस्राएलियों को सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर करने का साधन प्रदान करने के लिए संयोजन में कार्य करते थे। तो इनमें से ऐसी कौन सी चीज़ें हैं जिन्होंने इस्राएलियों को यह भेद करने में सक्षम बनाया?

1) पैगंबर का नैतिक चरित्र

पहला, "पैगंबर का नैतिक चरित्र जैसा कि उनके दैनिक आचरण में देखा जाता है।" इसे अक्सर ऐसी चीज़ के रूप में इंगित किया जाता है जो एक भूमिका निभाती है। मुझे लगता है कि कभी-कभी इस पर जरूरत से ज्यादा जोर दिया गया है। यदि आप अपने उद्धरणों में पृष्ठ आठ को देखते हैं, तो ध्यान दें कि होबार्ट फ्रीमैन कहते हैं, "झूठे भविष्यवक्ताओं की विशेषता उनकी कम नैतिकता थी; इसलिए, सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं को व्यक्तिगत या बाहरी परीक्षण द्वारा पहचाना जा सकता है। झूठा

भविष्यवक्ता एक भाड़े का व्यक्ति था जो भाड़े के लिए भविष्यवाणी करता था (मीका 3:5, 11); वह शराबी था (यशायाह 28:7); वह अपवित्र और दुष्ट था (यिर्मयाह 23:11); उसने दूसरों के साथ मिलकर धोखा देने और धोखा देने की साजिश रची (यहेजकेल 22:45); वह हल्का और विश्वासघाती था (सफन्याह 3:4); उसने व्यभिचार किया, झूठ बोला और दुष्टों का साथ दिया (यिर्मयाह 23:1); और वह आम तौर पर जीवन आचरण में अनैतिक था (यिर्मयाह 23:15)।" अब आप उन सभी संदर्भों, उन सभी चीजों को देखें जो इसमें कही गई हैं; हाँ, वे वहाँ हैं। आप देख सकते हैं कि यह किसी ईमानदार ईश्वरीय व्यक्ति का चित्रण नहीं करता है। वह आगे कहते हैं, "झूठा पैगंबर, इसके अलावा, एक धार्मिक अवसरवादी था जो केवल वही भविष्यवाणी करता था जो पतित लोग सुनना चाहते थे, उसने शांति और समृद्धि का एक आशावादी संदेश दिया; वह अक्सर भविष्यवाणी करता था, और अपने दिल से झूठ की भविष्यवाणी करता था। नीचे की पंक्ति देखें, "पैगंबर का नैतिक चरित्र स्वयं उसके अधिकार की पुष्टि करेगा। जिसने इस्राएल के पवित्र परमेश्वर की ओर से एक दैवीय आदेश का दावा किया, उसे उस दावे के अनुरूप आचरण और चरित्र को प्रतिबिंबित करना चाहिए। मैथ्यू 7:15-20 कहता है, "तुम्हारे फल से तुम उन्हें पहचानोगे।" तो बुरा फल और अच्छा फल होता है। इस प्रकार उनके फल से तुम उन्हें पहचान लोगे। हम पैगम्बर के नैतिक चरित्र को देख सकते हैं और यह सच्चे और झूठे पैगम्बर के बीच अंतर करने में सहायक है।

अब मुझे लगता है कि इस पर विचार करना महत्वपूर्ण है, लेकिन मुझे लगता है कि फ्रीमैन ने यहां मामले को स्पष्ट रूप से बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया है। मेरे ऐसा कहने का कारण यह है कि भले ही आपको झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अनैतिकता के ये संदर्भ मिलते हैं, पुराने नियम में चित्रित अन्य झूठे भविष्यवक्ता भी हैं जिनके बारे में उस प्रकार का कुछ भी नहीं कहा गया है। अब हम हनन्याह के बारे में बहुत कुछ नहीं जानते, उदाहरण के लिए; उनके नैतिक चरित्र के बारे में कुछ नहीं कहा गया है। मैं सोचता हूँ कि यह संभव है कि जहां तक उनके नैतिक आचरण का सवाल है, कुछ झूठे भविष्यवक्ता अनुकरणीय जीवन जीएंगे। तो यह सिक्के का एक पहलू है।

दूसरा पक्ष यह है कि हमें सच्चे पैगम्बरों के नैतिक चरित्र की दोषहीनता को बढ़ा-

चढ़ाकर नहीं बताना चाहिए क्योंकि सच्चे पैगम्बर पापरहित नहीं थे। मुझे लगता है कि फ्रीमैन जो कहता है, वह सामान्य तौर पर सच है - कि सच्चे भविष्यवक्ताओं को ईश्वरीय, धर्मपरायण लोगों के रूप में चित्रित किया गया है जो ईश्वरीय जीवन जीते थे। हालाँकि, आप बिलाम के साथ क्या करते हैं? वह सच्चा भविष्यवक्ता था, लेकिन उसे एक धर्मात्मा व्यक्ति के रूप में चित्रित नहीं किया गया है; वह एक विधर्मी भविष्यवक्ता था। आप उस बूढ़े भविष्यवक्ता के साथ क्या करते हैं जिसने 1 राजा 13 में यहूदा से परमेश्वर के भक्त को धोखा दिया था जो इस्राएल की यारोबाम की वेदी के विरुद्ध भविष्यवाणी करने आया था। उसके बूढ़े भविष्यवक्ता ने उसे घर आने और उसके साथ भोजन करने में मदद करने के लिए उस भविष्यवक्ता से झूठ बोला। परन्तु उस झूठ बोलनेवाले भविष्यवक्ता ने यहोवा की ओर से सच्चा सन्देश भी दिया। इसलिए मेरा मानना है कि एक भविष्यवक्ता के नैतिक चरित्र को ध्यान में रखा जाना चाहिए, लेकिन अपने आप में यह एक सच्चे और झूठे भविष्यवक्ता के बीच अंतर करने के लिए आधार प्रदान करने के लिए पर्याप्त नहीं है। 2 कुरिन्थियों 11:13-15 को देखें, "क्योंकि ऐसे मनुष्य झूठे प्रेरित, और धोखेबाज, और मसीह के प्रेरितों का भेष धारण करने वाले हैं। और कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि शैतान स्वयं ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का भेष धारण करता है। यह आश्चर्य की बात नहीं है, यदि उसके सेवक धार्मिकता के सेवकों का रूप धारण करते हैं। उनका अंत वही होगा जो उनके कृत्यों के योग्य होगा।" तो हाँ, एक भविष्यवक्ता का नैतिक चरित्र, ऐसे कई ग्रंथ हैं जो बताते हैं कि सामान्य तौर पर सच्चे भविष्यवक्ता ईश्वरीय लोग थे, और झूठे भविष्यवक्ता नहीं थे। लेकिन यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो वायुरोधी हो; इसे अन्य चीज़ों से भी जोड़ा जाना चाहिए।

2) चिन्हों और चमत्कारों का प्रदर्शन दूसरा विचार या मानदंड है, "चिन्हों और चमत्कारों का प्रदर्शन।" अक्सर संकेतों और चमत्कारों को सच्चे और झूठे भविष्यवक्ता के बीच अंतर करने के लिए एक महत्वपूर्ण सत्यापन मानदंड के रूप में इंगित किया जाता है। यदि आप देखें कि पवित्रशास्त्र में, विशेष रूप से पुराने नियम में, संकेत और चमत्कार कैसे कार्य करते हैं, तो आप पाएंगे कि संकेत और चमत्कार मुख्य रूप से भविष्यवक्ता के शब्द को

प्रमाणित करने और यह दिखाने के लिए दिए गए हैं कि भविष्यवक्ता वास्तव में भगवान से शब्द दे रहा है। संकेत और चमत्कार संदेश की प्रामाणिकता की पुष्टि करते हैं। इस तरह, संकेत और चमत्कार विश्वास के लिए सहायक हैं, कि भविष्यवक्ता जो कह रहा है वह वास्तव में भगवान का एक शब्द है। ल्यूक 10:13 में यीशु चोराज़िन के निवासियों से कहते हैं , "यदि जो चमत्कार तुम में किए गए , वे सूर और सैदा में किए गए होते, तो उन्होंने टाट और राख में बैठकर बहुत पहले ही पश्चाताप कर लिया होता।" चमत्कार देखें जो विश्वास में सहायक थे। जॉन 20:30-31 में यह कहा गया है, "यीशु ने कई अन्य चमत्कार किए जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं, लेकिन ये लिखे गए हैं," - हमारे पास कुछ चमत्कारों का वर्णन क्यों है? - "ताकि आप विश्वास कर सकें कि यीशु हैं मसीह।" चमत्कार उसके संदेश को प्रमाणित करते हैं। यूहन्ना 14:11 कहता है, "जब मैं कहता हूँ कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है, तो मुझ पर विश्वास करो, या कम से कम चमत्कारों के प्रमाण पर विश्वास करो। " इसलिए संकेत और चमत्कार भविष्यवक्ता के शब्दों को प्रमाणित करने में कार्य कर सकते हैं।

पुराने नियम के निर्गमन अध्याय 4 पर वापस जाएँ। प्रभु ने इस्राएल को मिस्र की दासता से छुड़ाने के लिए अध्याय 3 में मूसा को बुलाया, लेकिन अध्याय 4 में मूसा ने आपत्ति जताते हुए कहा, "वे मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे या मेरी बात नहीं सुनेंगे, वे कहेंगे, 'प्रभु ने तुम्हें दर्शन नहीं दिया।' मूसा सोच रहा है, 'मैं इसका प्रतिकार कैसे कर सकता हूँ?' मैं कहता हुआ आता हूँ, 'यहोवा यही कहता है,' वे कहते हैं, 'मैं तुम पर विश्वास नहीं करता।'" "प्रभु ने उससे कहा, 'तुम्हारे हाथ में वह क्या है?' 'एक कर्मचारी,' उसने उत्तर दिया। प्रभु ने कहा, 'इसे नीचे फेंक दो।' मूसा ने उसे भूमि पर पटक दिया और वह साँप बन गया और वह उसके पास से भागा। प्रभु ने कहा, 'अपना हाथ बढ़ाओ और इसकी पूंछ पकड़ लो।' तब मूसा ने हाथ बढ़ाकर साँप को पकड़ लिया, और वह उसके हाथ में लाठी बन गया।" श्लोक 5 में ध्यान दें, "'यह,' प्रभु ने कहा, 'ताकि वे विश्वास करें कि प्रभु, उनके पूर्वजों का परमेश्वर - इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, याकूब का परमेश्वर - तुम्हारे सामने प्रकट हुआ है। तब प्रभु ने कहा, 'अपना हाथ अपने कोट में डालो। तब मूसा ने उसके अंगरखे में हाथ

डाला , और जब उस ने उसे निकाला तो उसकी खाल कोढ़ जैसी हो गई, और बर्फ की नाई उजली हो गई। 'अब इसे वापस अपने कोट में डाल लो,' उन्होंने कहा। इसलिए मूसा ने उसे वापस अपने कोट में डाल लिया और वह उसके शरीर के बाकी हिस्सों की तरह ठीक हो गया। तब प्रभु ने कहा, 'यदि वे तुम पर विश्वास नहीं करते या पहले चमत्कारी चिन्ह पर ध्यान नहीं देते, तो वे दूसरे पर विश्वास कर सकते हैं। परन्तु यदि वे इन दोनों चिन्हों पर विश्वास न करें, या तेरी बात न मानें, तो नील नदी से थोड़ा जल ले आओ, और सूखी भूमि पर डाल दो। जो पानी तुम नदी से लोगे वह खून बन जाएगा।" तो आप देखिए कि प्रभु यहां मूसा से क्या कह रहे हैं - वह उसे चमत्कारी संकेत और चमत्कार दिखाने में सक्षम करेगा जो प्रमाणित करेगा कि वह जो कह रहा है वह उसी से आ रहा है। और निःसंदेह, इसके बाद जो होता है वह अध्याय 5 में फिरौन को आदेश देने वाला प्रश्न है कि इस्राएल को प्रभु की आराधना करने के लिए जंगल में जाने दिया जाए। और फिरौन कहता है, मैं यहोवा पर विश्वास नहीं करता। मैं तुम्हें प्रभु की आराधना क्यों करने दूँ?" तब तुम्हें चमत्कारी संकेतों की एक पूरी शृंखला मिलेगी, दस विपत्तियाँ। पूरे रास्ते इस कथन के साथ कि "ताकि तुम जान लो कि मैं प्रभु हूँ।" तो वे चमत्कार प्रामाणिक संकेत बन जाते हैं कि मूसा यहोवा के लिए बोल रहा है और यहोवा मौजूद है और वह जो कह रहा है वह वास्तव में यहोवा की ओर से है।

मुझे लगता है कि आप जो पाते हैं वह रहस्योद्घाटन और मुक्ति के इतिहास में महत्वपूर्ण बिंदुओं पर है, ऐसे मोड़ हैं, जिन समय मैं कहूंगा कि संकेत और चमत्कार भविष्यवक्ता के शब्द का प्रमाणीकरण देने के लिए कई गुना बढ़ जाते हैं, इस मामले में मूसा के लिए। इसलिए संकेत और चमत्कार महत्वपूर्ण हैं और हमें उनके महत्व को कम नहीं करना चाहिए।

लेकिन साथ ही मुझे लगता है कि हमें यह पहचानना होगा कि एक संकेत या चमत्कार अपने आप में सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं को अलग करने के लिए पर्याप्त नहीं है। इसका कारण यह है कि पवित्रशास्त्र यह भी मानता है कि झूठे भविष्यवक्ता संकेत और चमत्कार दिखाने में सक्षम हैं। यहां तक कि मिस्रवासी भी पहली तीन विपत्तियों की नकल कर सकते थे। वे उससे आगे नहीं बढ़ सके. लेकिन मैथ्यू 24:23 को देखें। यह मसीह के

दूसरे आगमन की बात कर रहा है, "उस समय यदि कोई तुम से कहे, 'देखो, मसीह यहाँ है!' या 'वह वहाँ है!' उस पर विश्वास मत करो. क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता प्रकट होंगे और चुने हुए लोगों को भी धोखा देने के लिए बड़े चिन्ह और चमत्कार दिखाएंगे, यदि ऐसा हो सके।" पॉल, 2 थिस्सलुनीकियों 2:9 में मसीह-विरोधी के बारे में बोलते हुए कहते हैं कि उनका आना "सभी प्रकार के नकली चमत्कारों, संकेतों और चमत्कारों में प्रदर्शित शैतान के कार्य के अनुसार है।" उनके पास नकली चमत्कार हैं।

आप व्यवस्थाविवरण पर वापस जाएँ, इस बार अध्याय 13 पर। श्लोक 1-4 में, मूसा कहते हैं, "यदि कोई भविष्यवक्ता, या स्वप्न के द्वारा भविष्यवाणी करने वाला, तुम्हारे बीच प्रकट होता है और तुम्हें चमत्कारी चिन्ह या चमत्कारों की घोषणा करता है, और यदि चिन्ह या जो कुछ उस ने कहा वह आश्चर्य घटित होता है, और भविष्यद्वक्ता कहता है, आओ हम दूसरे देवताओं के पीछे चलें जिन्हें तुम नहीं जानते, और उनकी उपासना करें। तुम्हें उस भविष्यद्वक्ता या स्वप्न देखने वाले की बातें नहीं सुननी चाहिए। क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा यह जानने के लिये तुम्हारी परीक्षा कर रहा है कि तुम उस से अपने सारे मन और सारे प्राण से प्रेम रखते हो या नहीं। यह तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है जिसका तुम्हें अनुसरण करना चाहिए, और तुम्हें उसका आदर करना चाहिए।" फिर पद 5, "उस भविष्यद्वक्ता या स्वप्नदृष्टा को अवश्य मार डाला जाना चाहिए क्योंकि उस ने तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध विद्रोह का प्रचार किया।" व्यवस्थाविवरण 13 का वह अंश कह रहा है कि झूठे भविष्यवक्ता चिन्ह और चमत्कार भी दिखा सकते हैं, लेकिन आपको उनसे गुमराह नहीं होना चाहिए। मुझे लगता है कि बाइबल जो सुझाव देती है वह यह है कि संकेत और चमत्कार सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं लेकिन अलगाव में संकेत और चमत्कार निर्णायक नहीं होते हैं। आपको वास्तव में संदेश को भी देखना होगा। आप देखते हैं, यदि अन्य देवताओं की सेवा करने के संदेश के संबंध में कोई संकेत या चमत्कार आता है, तो आप जानते हैं कि यह भगवान का एक शब्द नहीं है, और वह संकेत या चमत्कार भगवान की शक्ति का प्रकटीकरण नहीं है। इसलिए आप इसके महत्व को कम नहीं करना चाहते क्योंकि उन्हें अक्सर पवित्रशास्त्र में विश्वास के

सहायक के रूप में और भगवान के वचन को वास्तव में भगवान से होने के रूप में प्रमाणित करने के साधन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन साथ ही आपको इस बात से भी अवगत रहना होगा कि सच्चे उपदेशक के रूप में झूठे भविष्यवक्ता द्वारा किए गए संकेतों और चमत्कारों की संभावना है।

3) सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं को अलग करने के लिए एक मानदंड के रूप में भविष्यवाणी की पूर्ति a) Deut 18

आइए तीसरे पर चलते हैं, "सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं को अलग करने के मानदंड के रूप में भविष्यवाणी की पूर्ति।" व्यवस्थाविवरण 18 में हम पहले ही देख चुके हैं कि यदि यह सच नहीं होता है तो यह परमेश्वर की ओर से नहीं है। और यह निश्चित रूप से एक वैध मानदंड है। यह केवल नकारात्मक अर्थ में है भले ही यह ईश्वर की ओर से नहीं है, और इसे भविष्य में केवल तभी लागू किया जा सकता है जब जो कुछ भी भविष्यवाणी की गई है वह घटित होता है या नहीं होता है। इसलिए आप इसके महत्व को कम नहीं करना चाहते क्योंकि उन्हें अक्सर पवित्रशास्त्र में विश्वास के सहायक के रूप में और भगवान के वचन को वास्तव में भगवान से होने के रूप में प्रमाणित करने के साधन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन साथ ही, आपको इस बात से भी अवगत रहना होगा कि सच्चे भविष्यवक्ता के रूप में झूठे भविष्यवक्ता द्वारा किए गए संकेतों और चमत्कारों की संभावना है।

बी) ईसा। 41:22

आप इसे पुराने नियम में भी पाते हैं। यशायाह 41:22 को देखें, "हमें बताने के लिए कि क्या होने वाला है, अपनी मूर्तियाँ लाओ। क्या कोई मूर्ति भविष्य बता सकती है? हमें बताओ कि पिछली बातें क्या थीं ताकि हम उन पर विचार कर सकें और उनका अंतिम परिणाम जान सकें। या हमें आनेवाली बातें बता दो, और हमें बताओ कि भविष्य में क्या होगा, कि हम जान लें कि तुम ईश्वर हो। कुछ ऐसा करो, चाहे अच्छा हो या बुरा, ताकि हम

डर से भर जाएँ।” श्लोक 26 पर जाएँ, “इस बात को आरम्भ से किसने बताया, कि हम पहले से जान सकें, और कह सकें, 'वह सही था'? किसी ने इसके बारे में नहीं बताया, किसी ने इसकी भविष्यवाणी नहीं की, किसी ने आपकी कोई बात नहीं सुनी।” यशायाह 48:3 को देखें, “मैं ने पहिली बातों को बहुत पहिले से बताया, और अपने मुंह से प्रगट किया, और मैं ने उनको प्रगट किया; फिर अचानक मैंने कार्रवाई की और वे पूरे हो गये। क्योंकि मैं जानता था कि तुम कितने हठीले हो; तेरी गर्दन की नसें लोहे की, और तेरा माथा पीतल का था। इसलिये मैं ने ये बातें तुम से बहुत पहिले कह दी थीं; उनके घटित होने से पहले ही मैंने तुम्हें उनकी घोषणा कर दी ताकि तुम यह न कह सको, 'मेरी मूर्तियों ने उन्हें बनाया, मेरी लकड़ी की मूर्ति और पदक भगवान ने उन्हें ठहराया।' ये बातें तो तुम सुन चुके हो; उन सभी को देखो. क्या आप उन्हें स्वीकार नहीं करेंगे?” यीशु ने यूहन्ना 13.19 में कहा, "मैं तुम्हें इसके घटित होने से पहले ही बता रहा हूँ ताकि जब वह घटित हो, तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूँ।" देखिए, उन्होंने जो कहा, उसकी सत्यता के प्रमाण के रूप में भविष्यवाणी की पूर्ति की सकारात्मक प्रस्तुति है।

अब ऐसे ग्रंथों से पता चलता है कि केवल ईश्वर के पास ही भविष्य का आवश्यक ज्ञान है ताकि वह सटीकता और निरंतरता के साथ होने वाली चीजों के बारे में पहले से बता सके। वह सटीकता और निरंतरता महत्वपूर्ण है. मेरा मानना है कि यह केवल ईश्वर ही है जो भविष्य में होने वाली चीजों के बारे में लगातार और सटीक रूप से बोल सकता है। इसलिए मुझे लगता है कि भविष्यवाणी की पूर्ति को ईश्वरीय रहस्योद्घाटन को मान्य करने के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

ग) देउता। 13

लेकिन इसकी भी अपनी सीमाएँ हैं। यह अपने आप में निर्णायक नहीं है और यह अलगाव में भी निर्णायक नहीं है। आपने व्यवस्थाविवरण 13 में देखा कि हमने संकेतों और चमत्कारों के अंतर्गत देखा। निश्चित रूप से भविष्यवाणियों को वहां शामिल किया जाना चाहिए "यदि कोई भविष्यवक्ता या सपने में भविष्यवाणी करने वाला आपके बीच प्रकट

होता है और आपको एक चमत्कारी संकेत या चमत्कार की घोषणा करता है और यदि संकेत या चमत्कार होता है," दूसरे शब्दों में, यदि वह जो भविष्यवाणी करता है वह वास्तव में होता है। "लेकिन वह कहता है, 'चलो अन्य देवताओं की पूजा करें,'" आप निश्चित हो सकते हैं कि वह वह नहीं है जिसका संदेश ईश्वर की ओर से है। मुझे लगता है कि यह निश्चित रूप से कुछ स्थितियों में संभव है जहां भविष्यवक्ता और भविष्यवक्ता भी सच्ची भविष्यवाणी देने में सक्षम थे। प्रेरितों के काम 16:16 कहता है, "एक बार जब हम प्रार्थना के स्थान पर जा रहे थे, तो हमारी मुलाकात एक दासी से हुई जिसके पास एक आत्मा थी जिसके द्वारा वह भविष्य की भविष्यवाणी करती थी। उसने भाग्य-विद्या से अपने मालिकों के लिए बहुत सारा पैसा कमाया। यह लड़की चिल्लाते हुए पॉल और हममें से बाकी लोगों के पीछे चली गई, ये लोग परमप्रधान ईश्वर के सेवक हैं, जो आपको बचाए जाने का रास्ता बता रहे हैं।" मुझे लगता है कि आत्माओं की इस शैतानी दुनिया के भीतर यह संभव है भविष्य का ज्ञान रखने के लिए कुछ सीमित मापदंड। आप कभी-कभी पा सकते हैं कि एक बुतपरस्त भविष्यवक्ता वास्तव में कुछ भविष्यवाणी करता है। इसलिए अलगाव में कोई भी भविष्यवाणी इस बात का प्रमाण नहीं है कि जो भविष्यवक्ता इसे बनाता है वह ईश्वर का प्रवक्ता होने की गारंटी है।

इसके बारे में दूसरी बात यह है, जैसा कि हमने पहले व्यवस्थाविवरण 18 में बात की थी, यदि यह घटित नहीं होता है तो यह ईश्वर की ओर से नहीं आता है। आप इसे केवल भविष्य में ही लागू कर सकते हैं और यदि भविष्यवाणी सुदूर भविष्य की है तो मूल संदेश सुनने वाला कोई भी आसपास नहीं होगा। इसलिए गैर-पूर्ति महत्वपूर्ण है लेकिन इसकी अपनी सीमाएँ हैं।

मैंने इस बारे में सोचने के लिए अय्यूब के शुरुआती अध्यायों का उपयोग किया है जहां भगवान शैतान को पट्टे पर रखता है लेकिन कुछ मापदंडों के भीतर। शैतान को वह करने की अनुमति है जो वह करना चाहता है। वह अय्यूब की जान नहीं ले सकता, इसलिए वह पट्टे पर है। लेकिन उन मापदंडों के भीतर वह पहले से जान सकता है कि वह क्या करने जा रहा है, इसलिए वह सर्वज्ञ नहीं है। लेकिन भविष्य का ज्ञान सीमित है।

मारी गोलियों में भविष्यवक्ता भविष्य की भविष्यवाणी नहीं कर रहे थे। समस्या का एक हिस्सा यह था कि बाइबिल के बाहर आपको भविष्यवाणियों का कोई अन्य संग्रह नहीं मिलता है जो इतना व्यापक हो और जो सदियों से शताब्दी तक आंदोलनों के सुसंगत तनाव के साथ सदियों से अनुक्रमिक हो। यह बढ़ता और विकसित होता है। तुलनीय कुछ भी नहीं है और मुझे लगता है कि बाइबिल जो दावा करती है, उसकी सच्चाई के लिए यह स्वयं एक प्रमाण है।

4. पिछले रहस्योद्घाटन की अनुरूपता

मुझे लगता है कि यहां महत्वपूर्ण सत्यापन मानदंड है, और यह 4 से संबंधित है, "पिछले रहस्योद्घाटन की अनुरूपता।" यह प्रगति है। इसलिए नई भविष्यवाणी केवल उसी पर आधारित हो सकती है जो पहले हो चुकी है और उसका खंडन नहीं कर सकती। भविष्यवक्ता हनैया आते हैं और कहते हैं "शांति", लेकिन इज़राइल शांति की उम्मीद नहीं कर सकता क्योंकि वे प्रभु का अनुसरण नहीं कर रहे हैं और उन्हें न्याय की उम्मीद करनी चाहिए। यह पिछले खुलासों के अनुरूप नहीं है। हमें कुछ ऐसा मिलना शुरू होता है, जो इन कुछ अन्य मानदंडों के साथ संयोजन में, अंतर करने का साधन देगा। लेकिन हनन्याह के साथ वह अल्पकालिक भविष्यवाणी है और दो साल के साथ हनन्याह होगी।

5. ईश्वर की आत्मा द्वारा प्रबोधन जो आवश्यक भी है, यह वह तरीका है जिससे ये मानदंड एक साथ काम करते हैं जो 5 के साथ चलता है, "ईश्वर की आत्मा द्वारा प्रबोधन जो आवश्यक भी है।" हम अगली बार संख्या 4 और 5 पर और गौर करेंगे।

प्रतिलेखित: टेसा व्हाइट, सारा हॉकिन्स, ब्रीन्ना ऑरिगेमा, केज़िया पार्क, हेले पोमेरॉय (संपादक)

प्रतिलेखित: नामा मेंडेस, एना परेरा, लौरा नॉक्स, एंड्रिया मस्तांगेलो, टेड हिल्डेब्रांट, सेरेन किंग (संपादक)

टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन

केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,

टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया